नजरू

❑ अब्दुल गफ्फार

भय बच्चे को असहज कर देता है और जरूरी नहीं बच्चा स्कूल और शिक्षक से ही भयभीत हो । भय से बच्चा आत्मविश्वास खो देता है और अपनी अस्मिता को लेकर हीनता अनुभव करता है । कई बार औरों का नजरिया बच्चे की आत्मछवि को प्रभावित करता है ।

मुझे बच्चों के साथ शिक्षण कार्य करते हुए छ: माह ही हुए थे कि विद्यालय में अन्य बच्चों को प्रवेश दिया गया । नये बच्चों को प्रवेश मिल जाने से मेरे समूह के बच्चों की संख्या 22 हो गई। ये बच्चे ग्रामीण परिवेश के थे जिनमें ज्यादातर बच्चे निम्न मध्यम परिवारों के थे । जो बच्चे मध्यम परिवारों से थे, उनके माता–पिता खेती करते थे । जिनके खेती नहीं थी उनके माता–पिता मजदूरी करके अपना जीवनयापन करते थे ।

मैंने इन बच्चों के साथ लगभग डेढ़ वर्ष तक कार्य किया है। इस समयावधि में मुझे कई बच्चों ने सोचने को मजबूर किया । कई ने मेरे शिक्षण कार्य में मुझे मेरी असफलता का अहसास करवाया तथा मुझे एक दिशा प्रदान की । उन्हीं बच्चों में से एक था नजरु।

इस दुनिया में आने के बाद लगभग 10 वर्ष वह उस समाज में गुजार चुका था जहां से वह आया था । सांवला रंग, इकहरा बदन, हमेशा सहमे से रहने वाले नजरू से बातचीत करने पर अनायास ही मुख पर हल्की सी मुस्कुराहट दौड़ पड़ती थी । वह ज्यादातर समय विद्यालय में चुपचाप बैठा रहता । जब अन्य बच्चे स्वयं का कार्य करते रहते तो उन्हें देखता रहता और तब तक देखता, जब तक मैं उसे अपना कार्य करने का ध्यान नहीं दिला देता ।

मैं शिक्षण कार्य शुरू करने से पूर्व प्रतिदिन 5 मिनट रोज बातचीत के जरिए बच्चों को जानने का प्रयास करता । इस प्रक्रिया में बच्चे मेरे नजदीक आने लगे तथा आपसी रिश्ते बनने शुरू हुए। नजरु को विद्यालय आते हुए लगभग तीन माह हो चुके थे । इन तीन माह में वह कभी किसी बच्चे से नहीं लड़ा । वह हमेशा मुस्कुराता रहता। काम में मेरी मदद करता । विद्यालय की छुट्टी हो जाने के बाद दरियां समेटना, कापी इकट्ठी करना, झाड़ू लगाने वाला मात्र एक बालक नजरू था । दूसरे के हिस्से का भी काम करना, जो कहे उसका कार्य करना, उसके लिए सहज बात थी । मैं जब भी नजरू से नजरें मिलाता तो भययुक्त मुस्कुराहट उसके चेहरे पर अनायास आ जाती। उसे लगता कि कहीं उससे कोई गलती तो नहीं हो गई।

बच्चों की छुट्टी के बाद मैं रोज बच्चों द्वारा किये कार्य को देखता, जांचता एवं अंकन करता तथा अगले दिन की शिक्षण योजना बनाता । बच्चों के चले जाने के बाद भी नजरू मेरे पास ही बैठा रहता । मैं भी उससे बातें करता रहता । वह बीच बीच में मुझे बच्चों के बारें में बताता रहता कि वह गत्ता छोड़ गया । कभी पेन्सिल उठाकर लाता कि देखो यह कौन छोड़ गया ।

मैं सोचता कि यह कितना अच्छा लड़का है । मेरी कितनी मदद करता है । साथ ही कभी कभी यह विचार भी आता कि कहीं यह औरों की शिकायत तो नहीं कर रहा है ? अक्सर वह अपने कार्य के बारे में कहता कि आज दरियां मैंने समेट कर रखी हैं । कुछ समय के लिए वह चुप रहता । क्यों ? शायद वह अपने स्वयं के द्वारा किये गये कार्य के कुछ प्रतिफल चाहता हो । उसे शाबाशी मिले या उसे अच्छा लड़का कहें । जब मैं उसके द्वारा किये गये इन कार्यों पर प्रसन्नता जाहिर करता तब वह काफी खुश होता । यह खुशी उसके चेहरे से साफ बयां होती । और जब मैं किसी को कुछ नहीं कहता, तब वह मुझे आगाह कर देता कि कल बच्चों से बात करना।

एक दिन नजरू विद्यालय नहीं आया तो मैंने बच्चों से उसके न आने का कारण पूछा । बच्चों ने बताया कि वह तो भैंस चराने गया है । वह रोज भैंस चराता है । छुट्टी के बाद भी भैंस चराता है । यह सुनते ही नजरू का विद्यालय की छुट्टी के बाद मेरे पास बैठे रहना व उसकी सारी बातें मेरी आंखों व जेहन में घूम गई ।

नजरू छुट्टी के बाद मेरे पास क्यों बैठा रहता था ? घर क्यों नहीं जाता था ? आदि प्रश्न मन में उठे ।

नजरू का घर विद्यालय के करीब होने के कारण उसके माता–पिता से मुलाकात होती रहती थी । इन मुलाकातों में नजरू की पढ़ाई की प्रगति के बारे में भी बातचीत होती थी । मगर उसके पिताजी को विश्वास नहीं होता था कि यह पढ़ता भी है, सीखता है। मैंने एक मुलाकात में नजरू के पिता से विद्यालय के समय भैंस चराने न भेजने का आग्रह किया ।

उसके पिता ने कहा, यह तो पागल है, क्या पढ़ेगा? मैं विश्वास दिलाने की कोशिश करता रहा कि यह पागल नहीं है । वह सब कार्य करता है । वह किसी के कपड़े नहीं फाड़ता है । और फिर स्वयं आप पिता होकर उसे पागल कह रहे हो ? जब आप इसे पागल कहोगे तो मोहल्ले वाले भी कहेंगे । वास्तव में नजरू को न तो मोहल्ले में दोस्तों से सम्मान मिलता, न घर पर । दोस्त उसे पागल समझते थे तथा घर वाले उसे दोपाया जानवर; जिससे जितना हो सके काम लेते रहें । उनके हर छोटे बड़े आदेशों की पालना करना उसके लिए जरूरी था । समूह में कार्य करते समय उसे कभी विश्वास नहीं होता कि उसने जो किया वह सही है । उसमें आत्म विश्वास बिल्कुल भी नहीं था । जब वह पुस्तक में कार्य कर रहा होता था तो मुझे ऐसा आभास होता कि आज तो नजरू काम कर रहा है। मगर जब पुस्तक देखता तो पता चलता कि वह तो मात्र अब तक अर्जित क्षमता को ही फिर से दोहरा रहा है ।

एक दिन भाषा–हिन्दी का कालांश था। सभी बच्चे अपना अपना कार्य कर रहे थे। कोई पाठ पढ़ रहा था, कोई अभ्यास कर रहा था । नजरू भी अपनी पुस्तक लिए बैठा था । उसे अभी 'आ' की मात्रा समझ में नहीं आई थी । मेरी काफी मदद के बावजूद भी नजरू 'आ' की मात्रा नहीं सीख पाया । मैं स्वयं इस बात से चिन्तित था कि यह क्यों नहीं सीख पा रहा है ? आज नजरू को वही 'आ' की मात्रा सीखनी थी । उसकी बारी आई। मैं उससे मुखातिब हुआ । वह चौंक गया, भययुक्त सहमी आखों से एक टक मेरी तरफ देखता रहा । मैंने कहा पढ़ो, उसने नीचे पुस्तक में देखा। मैनें शब्द की तरफ इशारा किया कि उसी क्षण नजरू हल्का सा पीछे झुका । कभी किताब में देखता, कभी मेरे चेहरे को । पहली बार मैंने बच्चे के चेहरे को पढ़ा । मन की बात समझने की चेष्टा की और यहीं से मुझे मेरी असफलता का कारण पकड़ पाने में मदद मिली । मैंने बहुत धैर्य के साथ 'आ' की मात्रा समझाई तथा अपने आप कुछ 'आ' की मात्रा के शब्द पढ़ने को दे दिये ।

बच्चों की छुट्टी हो जाने के बाद मैं बार बार इस घटना के बारे में सोचता रहा कि नजरू हाथ के इशारे पर पीछे क्यों झुका? वह बार बार मेरी तरफ ऐसे क्यों देख रहा था ? मन ही मन इन सवालों के जवाब ढूंढ़ने की प्रक्रिया चली । इस पक्रिया में मैं स्वयं इस नतीजे पर पहुंचा कि मैं इसे 'आ' की मात्रा नहीं सिखा सकता क्योंकि नजरू को बड़े कहे जाने वाले व्यक्ति से भय लगता है। एक दिन मैं नजरू के पिता से मिला । पहले इधर उधर की बातचीत हुई। फिर शाला के शिक्षण कार्य की बातें शुरू हो गईं । इन मुलाकातों में ज्यादातर स्कूल की मान्यताओं पर बातचीत होती थी जो एकदम अनौपचारिक होती थी । यह मुलाकातें मुख्य रूप से दो कार्य करती थी – स्कूल की मान्यताएं समुदाय में संप्रेषित होती, दूसरे बालक बालिका की पारिवारिक पृष्ठभूमि की जानकारी शिक्षक को मिलती। ये दोनों एक दूसरे के लिए नितान्त आवश्यक थीं ।

बातचीत में नजरू के पिताजी बोले, मास्टर जी 'पीट्या बगैर कोन्ही पढ़े।' मैंने कहा, ऐसी बात नहीं है। बिना पीटे–डराये पढ़ा रहे हैं । उन्होंने कहा, 'धन छै: थाकी छाती। यहां तो ये बिना ठुक्या काम ही कोन्ही करे ।' बच्चों की पिटाई को लेकर हमारे बीच काफी लम्बी–बातचीत हुई । भय बच्चे के विकास में कैसे बाधक है ? इसे समझाने की पूरी कोशिश की । बातचीत के बीच में ही उन्होंने आवाज देकर चाय बनाने को कहा। उनका यह हुक्म नजरू के सिर आखों पर था, तुरन्त चूल्हा जला और चाय बनने लगी । वह खुशी खुशी चाय बनाता रहा। बातें सुनता रहा । शायद इसीलिए की आज वह अपने दोस्तनुमा मास्टर के लिए चाय बना रहा है । हमने चाय पी और वहां से विदा ली । नजरू मुस्कुराता रहा।

कुछ दिनों बाद पुन: नजरू को वही पाठ पढ़ाने का अवसर मिला और मुझे भी वही कार्य, जिससे मैं हार चुका था । आज उसने 'आ' की मात्रा के तीन शब्द बिल्कुल सही पढ़े । आगे कुछ और शब्द थे जो उसको अपने आप पढ़ने थे, उसने पढ़े और ज्यादातर सही पढ़े । कुछ ही दिनों बाद नजरू अपने आप को शाला में सहज महसूस करने लगा । अध्यापक को अपने वकील, सहायक तथा दोस्त के रूप में देखने लगा ।

मैं अधिक समय तक इस बच्चे के साथ शिक्षण कार्य नहीं कर सका । मुझे इससे बिछुड़ना पड़ा । मगर जितने दिन हम साथ रहे इसमें बराबर परिवर्तन आता रहा, उसकी सीखने में रूचि बनी, वहीं आत्मविश्वास बढ़ा तथा वह अपने खुद के प्रति सचेत होने लगा। मैं इस बच्चे से प्रत्यक्ष रूप से तो नहीं जुड़ सका मगर अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा रहा तथा व्यक्तिगत तौर पर सप्ताह में एक या दो बार मिलता रहा । जब भी मिलता नजरू केवल अपनी पढ़ाई के बारे में बताता, कहता कि मैंने यह पुस्तक पूरी पढ़ ली है और अब मैं फलां पुस्तक पर काम करूंगा । मुझे यह पता नही है कि मैंने नजरू को क्या सिखाया मगर इतना जरूर पता है कि मैंने उससे बहुत कुछ सीखा । ◆